राष्ट्रीय एकता

(पात्र : 'ह' (हिन्दू धर्म की ड्रेस पहने हुए— धोती कुर्ता, गले में 'ह' अक्षर का बोर्ड लगा हुआ है)
'म' (मुस्लिम धर्म की ड्रेस पहने हुए। गले में 'म' अक्षर का बोर्ड लगा हुआ है)
दोनों विपरीत तरफ से प्रवेश करते हैं। स्टेज के मध्य में आकर एक-दो को घूरते हैं। घूरते-घूरते गोल-गोल घूमते है)

'ह' – (अहंकार से) मुझसे बड़ा कोई नहीं है। मैं देवों में हरि, राजाओं में हरिश्चंद्र, तीर्थों में हरिद्वार, पशुओं में हाथी, पक्षियों में हंस, भोजन में हलुआ और सवारियों में हवाई जहाज हूँ।

'म' – (अहंकार से) मेरा सामना कौन करेगा...मैं देवों में महादेव, वीरों में महावीर, महर्षियों में महर्षि, मनुष्यों में मनु, फूलों में मन्दार, भोजन में मलाई, मालपुआ और मक्खन हूँ।

('ह' को 'म' की बात अच्छी नहीं लगती)

'ह' – (बिगड़कर) क्यों डींग मारते हो। सारा संसार जानता है कि तुम जीवों में मच्छर, मकड़ी और मक्खी हो। पानी में जाते हो तो मछली बन जाते हो। मैं हाकिम हूँ, मुझे लोग हजूर-हजूर कहते हैं।

'म' – वहाँ जाकर गाल बजाओ जहाँ तुम्हें कोई नहीं जानता है। तुम मनुष्यों में हिरण्यकश्यप, आभूषणों में हथकड़ी, राजनीति में हड़ताल, बर्तनों में हांडिया और रोगों में हैजा हो। मैं तो इंद्रियों में मन, मकानों में मंदिर और महल, व्यापारियों में महाजन और रत्नों में मोती हूँ।

'ह' – (जोर से हँस कर)- अपने मुँह ही मियां मिट्ठू बन रहे हो। मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूँ कि तुम महामूर्ख हो, मक्कार हो, मतलबी हो और म्लेच्छ हो। तुम फूलों में महुआ, खाद्यपदार्थों में माँस, रोगों में मलेरिया हो। मैं पर्वतों में हिमालय, अंगों में हृदय हूँ। मैं हँसमुख हूँ, हँसता हूँ और दूसरों को भी हँसाता हूँ। तुम तो हँसते हुए आदमी को भी मार डालते हो। मुर्दा बनाते हो।

'म' – क्या मैं लोगों को मुर्दा बनाता हूँ। तो अब मुर्दा बनने की तेरी बारी है।

(डंडे लेकर दोनों आपस में लड़ने लगते हैं)

इतने में एक ब्रह्माकुमार भाई वहाँ पर आता है।

ब्र.कु. – अरे ठहरो, रुक जाओ। तुम दोनों आपस में क्यों लड़ रहे हो?

'ह' – झगड़ा तो 'म' ने शुरू किया था। यह खुद की बड़ाई मार रहा था।

'म' – तुम भी तो अपने आप को श्रेष्ठ बताने के गप्पे हांक रहे थे।

ब्र.कु. – ओह! तो तुम दोनों में बड़ा कौन है, ये साबित करने के लिए तुम लड़ रहे हो। ठीक है, चलो इस बात का फैसला अब हो जायेगा। समझो ये डंडा 'ह' है और ये डंडा 'म' है। अब 'ह' तुम अपना डंडा 'म' को दो और 'म' तुम अपना डंडा 'ह' को दो। (दोनों ऐसा करते हैं) अब 'ह' तुम 'म' को तोड़ने की कोशिश करो और 'म' तुम 'ह' को तोड़ने की कोशिश करो।

(दोनों थोड़ा जोर लगाकर डंडे को तोड़ देते हैं और हँसने लगते हैं)

ब्र.कु. – अब 'ह' तुम्हारे पास जो डंडा है, उसका एक टुकड़ा 'म' को दो और 'म' तुम्हारे पास जो डंडा है, उसका एक टुकड़ा 'ह' को दो। अब तुम दोनों के हाथों में एक टुकड़ा 'ह' का है और दूसरा टुकड़ा 'म' का है। अब तुम दोनों इस 'ह' और 'म' अर्थात् 'हम' को तोड़ने की कोशिश करो।

(दोनों बहुत कोशिश करते हैं फिर भी डंडों को तोड़ने में असफल होते हैं)

ब्र.कु. – देखा, अगर 'ह' अकेला हो और 'म' अकेला हो तो उन्हें कोई भी आसानी से तोड़ सकता है। मगर जब 'ह' और 'म' दोनों मिल जायें अर्थात् 'हम' बन जायें तो उन्हें कोई भी नहीं तोड़ सकता। एकता में कितनी शक्ति है। तुम तो व्यर्थ ही आपस में लड़ रहे थे।

कौन हिन्दू, कौन मुसलमान
एक पिता की हम सब संतान।
आपस में करना कभी न लड़ाई
आत्मा-आत्मा हम हैं भाई-भाई।

शारीरिक जन्म से हमारे धर्म भले ही अलग-अलग हैं परंतु हम सब आत्मा हैं और आत्मा का एक ही स्वधर्म है, वह है शान्ति। इसलिए हमें इस शांति रूपी स्वधर्म में रहना है। एक-दूसरे के साथ शांति-प्रेम-सद्भावना से रहना है।

तुम तो भाई-भाई हो। अगर तुम झगड़ा छोड़ दो और आपस में मिल जाओ तो कितना अच्छा होगा।

(ब्र.कु. की बातें सुनकर 'ह' और 'म' दोनों गले मिल जाते हैं)

'ह' – अच्छा हुआ भाई, आपने हमारी आँखें खोल दी।

'म' – अब हम मैं-मैं नहीं करेंगे। आज से हम दोनों 'हम' बनकर मिल-जुलकर रहेंगे।

(सब मिलकर गीत गाते हैं –
एक-दूसरे से करते हैं प्यार हम
एक-दूसरे के लिए बेकरार हम
एक-दूसरे के वास्ते मरना पड़े तो
हैं तैयार हम, हैं तैयार हम...)